Research Paper Geography

जैन दर्शन मे भूगोल
Jain Darshan me Bhugoal

PROF. DR. B.L SETH DIRECTOR TRILOK INSTITUTE OF HIGHER STUDIES AND RESEARCH HOTEL OM TOWER, CHURCH ROAD, M. I. ROAD JAIPUR-302001

SHIKHA SHEKHAWAT RESERCH SCOLAR, JJT UNIVERSITY JHUNJHUNU

KEYWORDS

जैन दर्शन मे भूगोल

भूगोल के विषयान्तर्गत पृथ्वी, उसके चारों ओर का वायुमण्डल, आकाश में स्थित सौरमण्डल, पृथ्वी के नीचे की रचना, पृथ्वी पर रहने वाले जीव पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले पदार्थ, इनका एक दूसरे के साथ सम्बन्ध आदि बातें आती है। प्रत्यक्ष होने के कारण पृथ्वी की रचना सर्वसम्मत है लेकिन अन्य बातों को जानने के लिए अनुमान ही एकमात्र आधार है। यद्यपि आधुनिक यंत्रों से अत्यधिक खोज की जा चुकी है परन्तु इस असीम सृष्टि की सम्पूर्ण जानकारी यंत्रों की अपेक्षा योगियों की सूक्ष्य दृष्टि में निहित है। यही सूक्ष्म दृष्टि आज तक भारत में भूगोल का आधार रही है। जैन, वैदिक, बौद्ध आदि सभी दर्शनकारों ने अपने अपने दृष्टिकोण से इस विषय को लिया है और आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी इस क्षेत्र में कार्य किया है यद्यपि सभी की मान्यताएँ पृथक्–पृथक् है तथापि कुछ अंशों में मिलती है।

जैनाभिमत भूगोल परिचय

जैन मत के अनुसार इस अनन्त आकाश के मध्य का वह अनन्त और अकृत्रिम भाग जिस पर जीव, पुद्गल आदि षट्द्रव्य समुदाय दिखाई देता है लोक कहलाता है। लोक आकाश की तुलना में अत्यधिक छोटा है और उसी का खण्ड है, आकार में यह मनुष्य जैसा है।1 तथा चारों ओर तीन प्रकार की वायुओं से वेष्टित है। लोक के ऊपर से लेकर नीचे तक बीचों–बीच एक त्रसनाली है। जो एक राजू विस्तृत और 14 राजू लम्बी है।2 त्रस3 जीव इससे बाहर न रहते हैं और न जा सकते हैं। परन्तु स्थावर4 जीव सर्वत्र रहते है।

लोक तीन भागों5 में विभक्त है –

1. **अधोलोक**
2. **मध्य लोक**
3. **ऊर्ध्व लोक**

अधोलोक

अधोलोक में नारकी जीवों के रहने के अति दुखमय सात नरक है, जहाँ पापी जीव मरकर जन्म लेते है।

मध्यलोक

मध्यलोक में वलयाकार रूप से असंख्य द्वीप व समुद्र एक के पीछ एक स्थित है। जम्बू, घातकी, पुष्कर आदि तो द्वीप है और लवणोद, कालोद, वारूणीवर, क्षीखर, इक्षुवर आदि समुद्र है। प्रत्येक द्वीप व समुद्र पूर्व–पूर्व की अपेक्षा दूने विस्तार युक्त है। सबके बीच में जम्बू द्वीप है, जिसके बीचों–बीच सुमेरू पर्वत है। पुष्कर द्वीप के बीचा. ˇ–बीच वलयाकार मानुषोत्तर पर्वत है, जिससे उसके दो भाग हो जाते है।

ऊर्ध्वलोक

ऊर्ध्वलोक में करोड़ों योजनों के अन्तराल से एक के ऊपर एक करके 16 स्वर्गो में कल्पवासी विमान है। जहाँ पुण्यात्मा जीव मरकर जन्मते हैं। उनसे भी ऊपर एक भवावतारी लोकान्तिकों के रहने का स्थान है तथा लोक के शीर्ष पर सिद्धलोक है। जहां कि मुक्त जीव ज्ञान मात्र शरीर के साथ स्थित है।

जम्बूदीप, घातकी व पुष्कर का अभ्यन्तर अर्धभाग अढ़ाई द्वीप कहलाते हैं, इनसे आगे मनुष्यों का निवास नहीं है। शेष द्वीपों में तिर्यंच व भूतप्रेत आदि व्यन्तर देव निवास करते हैं।

जम्बूद्वीप में सुमेरू के दक्षिण में हिमवान, महाहिमवान व निषध तथ उत्तर में नील, रूक्मि व शिखरी ये छः पर्वत है जो इस द्वीप को भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक्, हैरण्यवत व ऐरावत नामक सात क्षेत्रों में विभक्त करते है। प्रत्येक पर्वत पर एक–एक महाह्रद है जिनमें से दो–दो नदियाँ निकलकर प्रत्येक क्षेत्र में पूर्व व पश्चिम दिशा मुख से बहती हुई लवण सागर में मिल जाती है। उस–उस क्षेत्र में वे नदियाँ अन्य सहस्रों नदियों को अपने में समा **लेती है। भरत व ऐरावत क्षेत्रों में बीचों–बीच** एक–एक विजयार्धपर्वत है। इन क्षेत्रों की दो–दो नदियों व इस पर्वत के कारण ये क्षेत्र छः छः खण्डों में विभाजित हो जाते हैं, जिनमें मध्यवर्ती एक खण्ड में आर्य रहते है और शेष पांच में मलेच्छ। इन दोनों क्षेत्रों में ही धर्म–कर्म व सुख–दुख आदि की हानि वृद्धि होती है, शेष क्षेत्र सदा अवस्थित है।

सुमेरू पर्वत के दक्षिण व उत्तर में क्रमशः निषध व नील पर्वत के शिखर को स्पर्श करते हुए दो दो गजदन्ताकार पर्वत है। निषध पर्वतास्पर्शी पर्वत है सौमनस व विद्युत्प्रभ तथा नील पर्वतास्पर्शी गन्धमादन व माल्यवान है, जिनके मध्य क्रमशः देवकुरू व उत्तरकुरू नाम की दो उत्कृष्ट भोग–भूमियां है, जहां के मनुष्य व तिर्यंच बिना कुछ कार्य करे अति सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते है। उनकी आयु भी असंख्यात् वर्षो की होती है। इन दोनों क्षेत्रों में शाल्मली व जम्बू नाम के दो वृक्ष है। जम्बू वृक्ष के कारण ही इसका नाम जम्बूद्वीप है। इसके पूर्व व पश्चिमी भाग में प्रत्येक में 16,16 क्षेत्र है, जो 32 विदेह कहलाते है। इनका विभाग वहाँ स्थित पर्वत व नदियों के कारण से हुआ है। इन क्षेत्रों में कभी धर्म विच्छेद नहीं होता। दूसरे व तीसरे आधे द्वीप में पूर्व व पश्चिम विस्तार के मध्य एक एक सुमेरू हैं। प्रत्येक सुमेरू सम्बन्धी छः पर्वत व सात क्षेत्र हैं जिनकी रचना विदेह क्षेत्र जैसी हैं।

लवणोद के तलभाग में अनेकों पाताल है, जिनमें वायु की हानि–वृद्धि के कारण सागर के जल में हानि–वृद्धि होती रहती है। पृथ्वी तल से 790 योजन ऊपर आकाश में क्रम से तारे, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, बुद्ध, शुक्र, गुरू, मंगल व शनिश्चर इन ज्योतिष ग्रहों के संचार क्षेत्र अवस्थित है, जिनका उल्लघंन न करते हुए वे सदा सुमेरू की प्रदक्षिणा देते हुए घुमा करते है। इसी के कारण दिन, रात, वर्षा, ऋतु आदि की उत्पत्ति होती है। जैनाम्नाय में चन्द्रमा की अपेक्षा सूर्य छोटा माना जाता है।

वैदिक धर्माभिमत भूगोल परिचय

पृथ्वी पर जम्बू प्लक्ष, शाल्मल, कुश, क्रौच, शाक और पुष्कर नामक सात द्वीप तथा लवणोद, इक्षुरस, सुरोद, सर्पिस्सलिल, दधितोय, क्षीरोद और स्वादुसलिल नामक सात समुद्र है।6 जो चूडी के आकार रूप में एक दूसरे को घेरे हुए स्थित है।7 ये द्वीप पूर्व–पूर्व की अपेक्षा दूने विस्तारवाले है।8

इन सबके बीच में जम्बूद्वीप और उसके बीच में सुमेरू पर्वत है। सुमेरू से दक्षिण में हिमवान, हेमकूट और निषध तथा उत्तर में नील, श्वेत और शृंगी नामक छः पर्वत है।9 ये पर्वत जम्बूद्वीप को सात क्षेत्रों में विभक्त कर देते है – भारतवर्ष, किंपुरुष, हरिवर्ष, इलावृत, रम्यक, हिरण्यमक और उत्तर कुरू।10

इलावृत क्षेत्र में सुमेरू के पूर्व और पश्चिम में माल्यवान व गन्धमादन नामक दो पर्वत है जो निषद व नील तक फैले हुए है। सुमेरू के चारों दिशाओं में11 उससे जुड़े हुए मन्दर, गन्धमादन, विपुल और सुपार्श्व ये चार पर्वत है। इनके उपर क्रमशः कदम्ब, जम्बू, पीपल, वट ये चार वृक्ष है। जम्बूवृक्ष के नाम से ही यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है।

भारत वर्ष कर्मभूमि व शेष वर्ष भोगभूमियाँ है। इसका कारण भारत वर्ष में ही कृतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग नामक चार काल स्वर्ग, मोक्ष के पुरुषार्थ की सिद्धि है। अन्य क्षेत्रों में सदा त्रेता युग रहता है और वहाँ के निवासी पुण्यवान व आधि–व्याधि से रहित होते है।

भरत क्षेत्र में महेन्द्र आदि छः पर्वत है, जिनसे चन्द्रमा आदि अनेक नदियाँ निकलती है। नदियों के किनारों पर कुरू पांचाल आदि (आर्य) और पौण्ड्र कलिंग आदि (म्लेच्छ) लोग रहते है।

प्लक्ष द्वीप में भी पर्वत व उनसे विभाजित क्षेत्र है। वहाँ प्लक्ष नाम का वृक्ष है और सदा त्रेता काल रहता है।

शाल्मल आदि शेष द्वीपों की रचना प्लक्ष द्वीपवत् है। पुष्कर द्वीप के बीचो–बीच वलयाकार मानुषोत्तर पर्वत है। जिससे उसके दो खण्ड हो गये है। अभ्यन्तर खण्ड

 ISSN - 2250-1991

का नाम धातकी है। यहाँ भोगभूमि है। इस द्वीप में पर्वत नदियाँ नहीं है। इस द्वीप को स्वादूदक समुद्र घेरे है। इससे आगे प्राणियों का निवास नहीं है।

इस भूखण्ड के नीचे दस–दस हजार योजन के सात पाताल है – अतल, वितल, नितल, गभस्तिमत्, महातल, सुतल और पाताल । पातालों के नीचे विष्णु भगवान हजारो फनों से युक्त शेषनाग के रूप में स्थित होते हुए इस भूखण्ड को अपने सिर पर धारण करते है।

सातों पातालों के नीचे रौरव, सूकर, रोध, ताल, विशसन, महाज्वाल, तत्तकुम्भ, लवण विलोहित, रूधिराम्भ, वैतरणी आदि महाभंयकर नरक है। जहाँ पापी जीव मरकर जन्म लेते है।

पृथ्वी से एक लाख योजन ऊपर एक एक लाख योजन के अन्तराल से सूर्य, चन्द्र व नक्षत्र मण्डल स्थित है, तथा उनके ऊपर दो–दो लाख योजन के अन्तराल से बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि तथा इसके उपर एक एक लाख योजन के अन्तराल से सप्तऋषि व ध्रुव तारे स्थित है। इससे एक करोड़ योजन ऊपर महलोक है जहाँ कल्पों तक जीवित रहने वाले कल्पवासी भृगु आदि सिद्धगण रहते है। इससे दो करोड योजन ऊपर जनलोक है जहाँ ब्रह्माजी के पुत्र सनकादि रहते है। आठ करोड़ योजन ऊपर तपलोक है जहाँ देवता निवास करते है। 12 करोड़ योजन ऊपर सत्यलोक है। जहाँ फिर से न मरने वाले जीव रहते है। इसे ब्रह्मलोक भी कहते है।

आदिपुराण एवं वैदिक पुराणों मे वर्णित भूगोल की तुलनात्मक समीक्षा –

दोनों मान्यताएँ बहुत अंशों में मिलती है। जैसे –

1. चूड़ी के आकार में अनेकों द्वीपों व समुद्रों का एक दूसरे को घेरे हुए स्थित होना।
2. दोनों मान्यताओं में द्वीपों व समुद्रों व पर्वतों के लगभग एक जैसे नाम होना– जम्बूद्वीप, सुमेरू, हिमवान, निषध, नील, श्वेत (रूक्मि), शृंगी (शिखरी) नामक पर्वत, भारत वर्ष (भरत क्षेत्र), हरिवर्ष, रम्यक, हिरण्यमय (हैरण्यवत्) उत्त. रकुरू ये क्षेत्र माल्यवान व गन्धमान पर्वत, जम्बूवृक्ष आदि।
3. भारत वर्ष में कर्मभूमि व अन्य क्षेत्रों में त्रेतायुग (भोगभूमि) का अवस्थान।
4. सुमेरू के चारों ओर मन्दर आदि पर्वत जैनमान्य चार गजदन्त है।
5. कुल पर्वतों से नदियों की निकलना तथा आर्य व मलेच्छ जातियों का अवस्था।
6. आदिपुराण में धातकी खण्ड में धातकी वृक्ष व जम्बूद्वीप के समान दूसरी रचना तथा वैदिक मत में प्लक्ष द्वीप में प्लक्ष वृक्ष जम्बूद्वीपवत् उसमें पर्वत व नदियों आदि का अवस्थान एक जैसा है।
7. पुष्कर द्वीप के मध्य वलयाकार मानुषोत्तर पर्वत तथा उसके अभ्यन्तर भाग में घातकी नामक खण्ड।
8. पुष्कर द्वीप से परे प्राणियों का अभाव लगभग वैसा ही है जैसा कि पुष्करार्ध से आगे मनुष्यों का अभाव।
9. भूखण्ड के नीचे पातालों का निर्देश लवण सागर के पातालों से मिलता है।
10. पृथ्वी के नीचे नरकों का स्थित होना दोनो में ही समान है।
11. आकाश में सूर्य, चन्द्र, आदि का अवस्थान क्रम समान है।
12. कल्पवासी तथा फिर से न मरने वाले देवों के लोक भी साम्य रखते है।

जम्बूद्वीप तुलनात्मक विवेचन

जैन महापुराण एवं वैदिक महापुराण दोनों में ही एक मान्यता है कि मध्यलोक में अनेकों द्वीप व समुद्र वलयाकार या चूडी के आकार में एक–दूसरे को घेरे स्थित है। सभी के बीच में जो द्वीप है उसका नाम जम्बूद्वीप बताया गया है जो गोल और 100,000 योजन वाला है।11 दोनों ही मान्यताओं में जम्बूद्वीप के मध्य सुमेरू पर्वत बताया गया है। जम्बूद्वीप में भरतवर्ष, हैमवतवर्ष, हरिवर्ष, विदेहवर्ष रम्यकवर्ष, हैरण्यवर्ष, ऐरावतवर्ष नामक सात क्षेत्र. है जिन्हें विभाजित करने वाले और पूर्व पश्चिम लम्बे हिमवान, महाहिमवान, निषध, नील, रूक्मी, शिखरी नामक छः पर्वत है।12

ये छहों पर्वत क्रम से सोना, चांदी, तपाया हुआ सोना वेडूर्यमणि चांदी और सोना इनके समान रंग वाले है। इनके पार्श्वभाग मणियों से चित्र विचित्र है। सभी ऊपर, मध्य और मूल में समान विस्तार वाले है, इन पर्वतों के उपर क्रम से पद्म महापद्म, तिगिंछ, केसरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक नामक तालाब है। पद्म तालाब में एक योजन का कमल है जिसके चारों तरफ अन्य भी अनेकों कमल है। इससे आगे के तालाबों में भी कमल है। ये तालाब व कमल उत्तरोत्तर दूने विस्तार वाले है। इन तालाबों के कमलों पर क्रम से श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी नामक देवियां अपने–अपने परिवार के देवों के साथ रहती है। तालाबो में से क्षेत्रों में क्रमशः दो दो करके क्रम से गंगा–सिन्धु, रोहित रोहितास्या, हरित–हरिकान्ता, सीता–सीतोदा, नारी–नरकान्ता, सुवर्णकूला–रूप्यकूला, रक्ता–रक्तोदा नदियाँ बहती है, इनमें भी गंगा सिन्धु व रोहितास्या पद्म द्रह से, रोहित व हरिकान्ता महापद्म द्रह से, हरित व सीतोदा तिगिंछ द्रह से सीता व नरकान्ता केशरी द्रह से, नारी व रूप्यकूला महापुण्डरीक से तथा सुवर्णकूला,रक्ता व रक्तोदा पुण्डरीक सरोवर से निकली है।13

यह द्वीप एक जगत के रूप में स्थित है। इसके चार द्वार है – विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित । यह द्वीप अनेकों वन, उपवनों, कुण्डों गोपुर द्वारों, देव नगरियों व पर्वत, नदी, सरोवर, कुण्ड आदि सब से शोभित है। प्रत्येक पर्वत पर अनेकों कूट होते है, प्रत्येक पर्वत व कूट नदी, कुण्ड, द्रह आदि वेदियों के रूप में संयुक्त होते है। प्रत्येक पर्वत, कुण्ड, द्रह कूटों पर भवनवासी व व्यन्तर देवों के पुर, भवन व आवास है। प्रत्येक पर्वत आदि पर तथा देवों के भवनों में जिन चैत्यालय होते है।

भरत क्षेत्र

भरत क्षेत्र जम्बूद्वीप के दक्षिण में स्थित है, जिसके उत्तर में हिमवान पर्वत और तीन दिशाओं में लवणसागर है। इसके बीचो–बीच पूर्व से पश्चिम को लम्बायमान एक विजयार्ध पर्वत है इसके पूर्व में गंगा और पश्चिम में सिन्धु नदी बहती है। ये दोनों नदियाँ हिमवान के मूल भाग में स्थित गंगा व सिन्धु नामक दो कुण्डों से निकलकर पृथक पृथक पूर्व व पश्चिम दिशा में, उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हुई विजयार्ध दो गुफाओं में से निकलकर दक्षिण क्षेत्र के अर्धभाग तक पहुँचकर, पश्चिम की ओर मुड जाती है, और अपने अपने समुद्रों में गिर जाती है। इस प्रकार इन दो नदियों व विजयार्ध पर्वत से विभक्त होकर इस क्षेत्र के छः खण्ड हो जाते है। विजयार्ध पर्वत के दक्षिण के तीन खण्डों में मध्य खण्ड आर्य खण्ड है। शेष पाँचों खण्ड म्लेच्छा खण्ड है। आर्य खण्ड के मध्य 12 व 9 योजन विस्तृत विनीता या अयोध्या नामकी प्रधान नगरी है जो चक्रवर्ती की राजधानी होती है। विजयार्ध के उत्तर वाले तीन खण्डों में मध्यवाले म्लेच्छ खण्ड के बीचों–बीच वृषभगिरि नाम का गोल पर्वत है। जिस पर दिग्विजय कर चुकने पर चक्रवर्ती अपना नाम अंकित करता है।

विजयार्ध पर्वत

भारत क्षेत्र के मध्य में पूर्व पश्चिम लम्बायमान विजयार्ध पर्वत है। भूमितल से 10 योजन ऊपर जाकर इसकी पूर्व व पश्चिम दिशाओं में विद्याधर नगरों की दो श्रेणियाँ है। वहाँ दक्षिण क्षेत्र में 55 और उत्तर श्रेणी 60 नगर है इन श्रेणियों से भी 10 योजन ऊपर जाकर उसी प्रकार दक्षिण व उत्तर दिशा में अभियोग देवों की श्रेणियाँ है। इसके ऊपर 9 कूट है।14 पूर्व दिशा के कूट पर सिद्धायतन है और शेष पर यथायोग्य नामधारी व्यनतर व भवनवासी देव रहते है। इसके मूल भाग में पूर्व व पश्चिम दिशाओं में क्रमशः खण्डप्रपात व तमिस्र नामकी दो गुफाएँ है जिनमें क्रमशः गंगा व सिन्धु नदी प्रवेश करती है।15 इन गुफाओं के भीतर बहु मध्यभाग में दोनों तटों से उन्मग्ना व निमग्ना नामक दो नदियाँ निकलती है जो गंगा और सिंधु नदियों में मिल जाती है।16

जम्बूद्वीप के क्षेत्र, ग्राम नगर, नदियां, पर्वत, वन, वृक्ष, सम्पत्ति एवं जीव जन्तु–

क्षेत्र नगर[17]

क्र.सं.	नाम	गणना	विवरण
1.	महाक्षेत्र	7	भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, ऐरावत, हैरण्यवत
2	कुरुक्षेत्र	2	देवकुरु व उत्तरकुरु
3	कर्मभूमि	34	भरत, ऐरावत व 32 विदेहक्षेत्र
4.	भोगभूमि	6	हैमवत, हरि, रम्यक व हैरण्यवत तथा देवकुरु व उत्तरकुरु
5.	आर्यखण्ड	34	प्रत्येक कर्मभूमि एक
6.	म्लेच्छ खण्ड	170	प्रत्येक कर्मभूमि पाँच
7	राजधानी	34	प्रति कर्मभूमि एक
8	विद्याधरों के नगर	3750	भरत व ऐरावत के विजयार्धों में से प्रत्येक पर 115 तथा 32 विदेह क्षेत्रों के विजयार्धों में से प्रत्येक पर 110।

जम्बूद्वीप के पर्वत[18]

क्र.सं.	नाम	गणना	विवरण
1.	सुमेरु	1	जम्बूद्वीप के बीचोबीच
2.	कुलाचल	6	हिमवान, महाहिमवान, निषध, नील, रुक्मि, शिखरी
3	विजयार्ध	34	प्रत्येक कर्मभूमि (भरत, ऐरावत, 32 विदेह) में एक
4.	वृषभगिरि	34	प्रत्येक कर्मभूमि के उत्तर मध्य म्लेच्छ खण्ड में एक
5.	नाभिगिरि	4	हैमवत, हरि, रम्यक व हैरण्यवत क्षेत्रों के बीचोबीच
6	वक्षार	16	पूर्व व अपर विदेह के उत्तर व दक्षिण में चार चार
7	गजदन्त	4	सुमेरु की चारों दिशाओं में
8.	दिग्गजेन्द्र	8	विदेह क्षेत्र के भद्रशालवन में व दोनों कुरुओं में सीता व सीतोदा नदी के दोनों तटों पर
9.	यमक	4	दो कुरुओं में सीता व सीतोदा के दोनों तटों पर
10	कांचनगिरि	200	दोनों कुरुओं में पाँच–पाँच द्रहों के दोनों पार्श्वभागों में दस दस

 ISSN - 2250-1991

नदियाँ[19]

नाम	गणना	परिवार प्रत्येक का	कुल प्रमाण विवरण
गंगा–सिन्धु	2	14000	28002 भारत क्षेत्र में
रोहित–रोहितास्या	2	28000	56002 हैमवत क्षेत्र में
हरित–हरिकान्ता	2	56000	112002 हरि क्षेत्र में
नारी–नरकान्ता	2	56000	112002 रम्यक क्षेत्र में
सुवर्णकूला व रूप्यकूला	2	28000	56002 हैरण्यवत क्षेत्र में
रक्ता रक्तोदा	2	14000	28002 ऐरावत क्षेत्र में
छः क्षेत्रों की कुल नदियाँ			392012 छः क्षेत्र
सीता–सीतोदा	2	84000	168002 दोनों कुरुओं में
क्षेत्र नदियाँ	64	14000	896064 32 विदेहों में
विभंगा	12		12
विदेह की कुल नदियाँ			1064078
जम्बू द्वीप की कुल नदी			1456090
विभंगा	12	280000	336000
जम्बूद्वीप की कुल नदी			1792090

ह्रद, कुण्ड, वृक्ष, गुफाएं, वन, कूट, चैत्यालय आदि

नाम	गणना	विवरण
ह्रद	16	कुलाचलों पर 6 तथा दोनों कुरु में 10[20]
कुण्ड	1792090	नदियों के बराबर[21]
वृक्ष	2	जम्बू व शाल्मली (ह.पु./5/8)
गुफाएं	68	उन विजयार्धों की[22]
वन	अनेक	सुमेरु के चार वन भद्रशाल, नन्दन, सौमनस व पाण्डुक। भूतांतट पर देवारण्यक व भूतारण्यक। सर्वपर्वतों के शिखरों पर, उनकी मूल में, नदियों के दोनों पार्श्वभागों में इत्यादि।
कूट	568	वैश्रवण, श्रीनिचय, क्षुद्रहिमवान आदि।[23]
चैत्यालय		कुण्ड, वनसमूह, नदियां देव नगरियां पर्वत, तोरण द्वार, द्रह, दोनों वृक्ष, आर्य खण्डों के तथा विद्याधरों के नगर आदि सब पर चैत्यालय हैं।

आदिपुराण में वर्णित भारत की स्थिति –

आदिपुराण में वर्णित भारत की सीमा का विस्तार पूर्व में अंग बंग, कामरूप, मगध, विदेह तक''24 दक्षिण में आंध्र, केरल, कोंकण, वनवास कर्णाटक, चोल, औद्र, मैसूर सिंहल तक''25 पश्चिम में ''सौराष्ट्र, सिन्धु, सौवीर, गुर्जर''26 तक उत्तर में ''कुरू, पांचाल, गांधार, काश्मीर27 आदि जनपदों तक बतलाया गया है। मध्य देश में काशी, कुरू कोशल, वत्स, अवन्ती, चेदि आदि जनपद विद्यमान थे, दक्षिण में गोदावरी तटवर्ती अमक का नामोल्लेख आया है।

REFERENCES

1ण आदिपुराण – 4–42 द्य 2ण आदिपुराण 4/45 द्य 3ण त्रस– अपनी रक्षार्थ स्वयं चलने फिरने वाले जीव त्रस कहलाते है। दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक जीव त्रस कहलाते हैं। अर्थात् लट, चींटी आदि से लेकर मनुष्य तक सभी त्रस हैं। ये जीव अल्प हो सकते हैं, पर सूक्ष्म नहीं। द्य 4ण स्थावर– ये जीव एकेन्द्रिय होते हैं तथा अपने स्थान पर स्थिर रहने के कारण स्थावर कहलाते हैं। ये जीव सूक्ष्म व बादर दोनों प्रकार के होते हुए सर्व लोक में पाये जाते हैं। द्य 5ण आदिपुराण 4/40–41 द्य 6ण विष्णु पुराण 2/2–7 (गीता प्रेस संस्करण, द्वितीय भाग) द्य 7ण विष्णु पुराण 2/2–4 द्य 8ण विष्णु पुराण 2/4, 88 द्य 9ण विष्णु पुराण 2/2/10 द्य 10ण विष्णु पुराण 2/2/12–13 द्य 11ण विष्णु पुराण 2/2/26–29 द्य 12ण हरिवंश पुराण, ज्ञानपीठ संस्करण 5/4–5 द्य 13ण आदिपुराण 4/47–51 द्य 14ण आदिपुराण 4/52–59 द्य 15ण तिलोयपण्णत्ति अधिकार, जीवराज ग्रन्थमाला, शोलापुर वि.स. 1999, 4/146 द्य 16ण तिलोयपण्णत्ति अधिकार, जीवराज ग्रन्थमाला, शोलापुर वि.स. 1999, 4/175 द्य 17ण तिलोयपण्णत्ति अधिकार, जीवराज ग्रन्थमाला, शोलापुर वि.स. 1999, 4/237 द्य 18ण हरिवंश पुराण 5/8–11 द्य 19ण हरिवंश पुराण 5/8–10 द्य 20ण हरिवंश पुराण 5/272–277 द्य 21ण जंबूदीवपण्णत्ति संगही अधिकार, जैन संस्कशति संरक्षण संघ, शोलापुर, वि.सं. 2014, 1/67 द्य 22ण तिलोयपण्णत्ति अधिकार, 4/2386 द्य 24. हरिवंश पुराण 5/10 द्य 23ण तिलोयपण्णत्ति अधिकार 4/2396 द्य 24ण आदिपुराण 16/152, 153, 154, 155, 29/42 द्य 25ण आदिपुराण 16/154, 155, 156 द्य 26ण आदिपुराण 16/154, 29/79, 29/80, 30/25 द्य 27ण आदिपुराण 16/153, 155